पाठ -९ बुनाई कला

GZQ8VS

ठंड से अपने शरीर की सुरक्षा करने के लिए हम जाड़े में ऊनी वस्त्र पहनते हैं जो ऊन से बने होते हैं। घर पर हम ऊनी वस्त्र जैसे- स्वेटर, टोपा, मोजा इत्यादि आसानी से कम पैसे में बना सकते हैं जो सस्ते एवं टिकाऊ होते हैं।

आइए जानें ऊन कहाँ से मिलता है?

ऊन हमें भेड़ों से प्राप्त होती है। भेड़ के बाल से ही ऊन बनाया जाता है। भेड़ के ये बाल ठंड से उसकी रक्षा करते हैं। इसी प्रकार बकरी, ऊँट, खरगोश आदि के बालों से ऊन बनाया जाता है। मेरीनों एवं अंगोरा जाति की भेड़ों से अच्छी किस्म का ऊन प्राप्त होता है। साल में एक बार भेड़ के बाल काटे जाते हैं। जब जाड़े का मौसम समाप्त होने को होता है और गर्मी आने को होती है, तब भेड़ों को बालों की जरूरत नहीं होती। उसी समय भेड़ के बालों को बड़ी-बड़ी कैंचियों तथा बाल काटने की मशीन द्वारा काट लिया जाता है। इन बालों में काँटे, गंदगी और चिकनाई होती है। बालों को साफ करने के लिए उन्हें समेटकर सुतलियों से बाँध दिया जाता है। अब इस ऊन की सफाई की जाती है। इसके बाद मशीनों की सहायता से ऊन की ऐंठन निकाली जाती है। अंत में इसे धागे के रूप में कात लिया जाता है। इसी ऊनी धागे से गर्म कपड़े बनाए जाते हैं। इन बालों से दो प्रकार के ऊन बनाए जाते हैं-

1. ऊन- इससे घर में स्वेटर, टोपा, मोजा इत्यादि बनाए जाते हैं।

2. महीन ऊनी धागा- इससे विभिन्न प्रकार के कपड़े मशीनों द्वारा बुने जाते हैं।

बुनाई का अर्थ (Meaning of Knitting)

कलात्मक ढंग से ऊन द्वारा फ्रंदे बनाकर सलाइयों के माध्यम से डिजाइनदार वस्त्र तैयार करना ही बुनाई है। स्वेटर, टोपा, मोजा, कार्डिगन, जैकेट, फ्रॉक आदि ऊनी वस्त्र इस कला के द्वारा तैयार किए जाते हैं।

बुनाई के प्रकार

ऊनी वस्त्र दो प्रकार से बुने जाते हैं-

1. हाथ द्वारा

2. मशीन द्वारा

हाथ द्वारा बुने वस्त्र सस्ते एवं टिकाऊ होते हैं। मशीन द्वारा बुने वस्त्र बहुत मंहगे होते हैं तथा इन्हें दुबारा उधेड़ कर बुनना भी संभव नहीं होता।

स्वयं बुनाई से लाभ

- अपने मनपसंद रंग व डिजाइन के वस्त्र बना सकते हैं।
- उचित नाप का स्वेटर बना सकते हैं जो न अधिक ढीला होगा, न बहुत कसा होगा।
- स्वयं बुना हुआ वस्त्र कम दाम में तैयार कर सकते हैं।
- छोटा होने पर, खोलकर दोबारा बुनाई कर सकते हैं।
- समय का सदुपयोग होता है एवं धन कमा सकते हैं।

ऊन का चुनाव

ऊनी वस्त्र तैयार करने के लिए ऊन का अपना विशेष स्थान है। इसलिए बुनाई में हमेशा अच्छे ऊन का प्रयोग करना चाहिए। बुनाई के लिए ऊन का चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए खरीददारी करनी चाहिए-

- सबसे पहले ऊन खरीदते समय पहनने वाले की आयु, रंग आदि का ध्यान रखकर ही ऊन खरीदें।
- बच्चों के लिए सदैव मुलायम ऊन ही खरीदें।

- ऊन हमेशा दिन में ही खरीदे जिससे रंग एवं गुण समझ में आए।
- अच्छा ऊन हल्का एवं मुलायम होता है एवं उसकी लम्बाई भी अधिक होती है।
- मोटा एवं सस्ता ऊन उत्तम ऊन की अपेक्षा कम गर्म होता है तथा अधिक लगता है।
- शिशुओं एवं छोटे बच्चों के लिए मुलायम एवं चटख रंग के ऊन का चुनाव करना चाहिए।

सलाई का चुनाव

बाजार में कई प्रकार की ऊन एवं स्वेटर आदि बुनने वाली सलाइयाँ मिलती हैं। बुनाई में अच्छे किस्म की सलाई का ही उपयोग करना चाहिए जो चिकनी, नोंकदार हो तथा कालिख न छोड़ती हो।

साधारणतया पतले ऊन के लिए पतली जैसे 11 या 12 नम्बर की सलाई, मोटे ऊन के लिए 9 या 10 नम्बर की सलाई लेनी चाहिए। अधिक मोटे ऊन के लिए 6 से 8 नम्बर की सलाई का प्रयोग करना चाहिए। स्वेटर का बार्डर अधिकांशतः 11 या 12 नम्बर की सलाई से बुना जाता है।

ऊन का गोला बनाना

बुनाई करने से पहले लच्छी का गोला बना लेते हैं। गोला बनाते समय सावधानी पूर्वक दोनों पैरों के घुटने में या किसी दूसरे के हाथों में ऊन की लच्छी को फंसाकर धीरे-धीरे हाथों से ढीला-ढीला लपेटते हुए गोला बनाना चाहिए। ऊन को बहुत कसकर नहीं लपेटना चाहिए।

ऊनी वस्त्रों के बुनते समय ध्यान रखने योग्य प्रमुख बातें

- बुनाई के लिए हमेशा अच्छी क्वालिटी की सलाइयाँ इस्तेमाल करें।
- सलाइयों को हमेशा बच्चों की पहुँच से दूर रखें, अन्यथा दुर्घटना होने का डर बना रहता है।
- हमेशा साफ हाथ से बुनाई करें।
- ऊन को गंदा होने से बचाने के लिए हमेशा बैग में रखें।

- बुनाई हमेशा पर्याप्त रोशनी में ही करें। कम रोशनी में बुनाई से आँखों पर जोर पड़ता है।
- स्वेटर का बार्डर, गले व मुड्ढे का बार्डर बुनते समय 11 अथवा 12 नम्बर की सलाई प्रयोग में लाएं।
- बार्डर के फंदे हमेशा दोहरी ऊन से डालें।

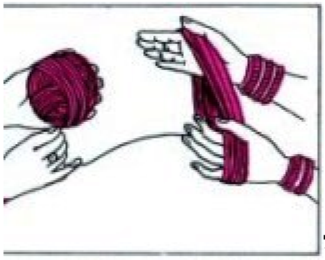

ऊन की लच्छी से गोला बनाना

बुनाई करने से पहले कुछ जरूरी बातें सीखना अत्यंत आवश्यक है, जिसमें फंदा डालना, सीधा व उल्टा फंदा बुनना, फंदा बढ़ाना, फंदा घटाना, फंदे उठाना, फंदे उतारना व फंदे बंद करना प्रमुख हैं।

फंदा डालना

आपको जितना फंदा डालना हो, उतना ही ऊन अंदाज से ले लें। अब एक सरकने वाली गाँठ सलाई पर चढ़ाकर, दाहिने हाथ से सलाई पकड़ते हुए बाएं हाथ के अंगूठे पर ऊन चढ़ाकर दाहिने हाथ वाली सलाई पर लूप बनाते हैं। इसके बाद गोले की तरफ वाली ऊन को दाहिने हाथ वाली सलाई के ऊपर से घुमाकर इसे उलटकर अंगूठे वाले लूप के अंदर से निकालिए। इस प्रकार अब आपका फंदा सलाई पर बन जाता है।

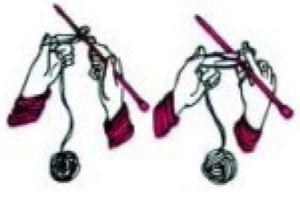

सलाई पर फंदा डालने की विधि

फंदे दो प्रकार के होते हैं- (1) सीधा फंदा (2) उल्टा फंदा

(1) सीधा फंदा - सीधा फंदा बुनते समय खाली सलाई को दाहिने हाथ में तथा फंदों वाली सलाई को बाएं हाथ में पकड़े। इसके बाद दाएं हाथ की खाली सलाई को बाएं हाथ की सलाई के फंदे में नीचे की ओर घुमाकर ऊन को एक बार बढ़ाकर फंदे के अंदर से निकालें। इसके बाद बाएं हाथ की सलाई से फंदे को गिरा देते हैं। इस प्रकार सीधा फंदा बुना गया।

(2) उल्टा फंदा - उल्टे फंदे में दाएं हाथ की सलाई को फंदे के बीच में से नीचे की ओर निकालते हुए अपनी ओर लाएं। सलाई की नोक पर ऊन को एक बार लपेटें और उसका लूप बनाते हुए इसे बाएं हाथ की सलाई के फंदे में से गिराते हुए निकाल लें। इस प्रकार ये फंदा उल्टा बुना गया।

फंदे बढ़ाना

ऊन से स्वयं बुनने वाले वस्त्रों जैसे- टोपा, मोजा, फ्रॉक, झालर आदि में उचित आकार लाने के लिए फंदे बढ़ाने पड़ते हैं। यह कोई कठिन काम नहीं है। फंदे बढ़ाना बहुत सरल है। फंदे दो प्रकार से बढ़ाते हैं-

1. जाली द्वारा फंदे बढ़ाना - इस विधि में ऊन को सलाई के आगे करके सीधा बुनने से सलाई पर ऊन चढ़ जाता है। इसे उल्टी तरफ से उल्टा बुन लेते हैं। इस प्रकार जाली द्वारा फंदा बढ़ाया जाता है। बच्चों की टोपी में इसी प्रकार से फंदा बढ़ाते हैं।

2. एक फंदे में दो बार बुनना - स्वेटर तथा आस्तीन में फंदे बढ़ाने के लिए किनारे की ओर फंदा बढ़ाने के लिए अंतिम फंदे के पूर्व वाले फंदे को दो बार (एक बार सीधा, एक बार उल्टा) बुनते हैं। इस प्रकार आवश्यकतानुसार बराबर दूरी पर फंदे बढ़ाने से आकार सही आ जाता है।

बच्चों की टोपी में झालर बनाने के लिए एक फंदे में तीन फंदा भी बढ़ाते हैं। इसके लिए एक फंदे में एक बार सीधा, फिर उसी में उल्टा, फिर उसी में सीधा बुनने से दो फंदे बढ़ जाते हैं।

फंदे घटाना

स्वेटर की आर्महोल (बगल) या गोल गला घटाने के लिए दो फंदा बुनकर पहले फंदे को दूसरे के ऊपर से उतार देते हैं। फिर तीसरा फंदा बुनकर दूसरे फंदे को उसके ऊपर से गिरा देते हैं। इस प्रकार फंदा घट जाता है। इस प्रकार हम केवल एक फंदा या कई फंदा घटा सकते हैं।

गले का फंदा एवं गले का फंदा घटाने की विधि

तिरछा घटाने के लिए किनारे से दो फंदों को एक कर देते हैं। बराबर दूरी पर इस प्रकार घटाने से तिरछा घटता है।

फंदे उठाना

स्वेटर का गला तथा बांह बनाने के लिए फंदा उठाना पड़ता है। इसमें दाहिने हाथ की सलाई की नोंक की सहायता से बुने हुए भाग के किनारे पर फंदा अंदर डालकर उसकी नोंक से एक फंदा बाहर निकाल लेते हैं। इस प्रकार आवश्यकतानुसार फंदे उठाते हैं।

फंदे बंद करना

जब ऊनी वस्त्र स्वेटर, फ्रॉक आदि बनाकर पूरा हो जाता है तो फंदे बंद किए जाते हैं। पहला फंदा दूसरे फंदे के ऊपर से गिराते हैं, इसी क्रिया को आगे दोहराने से सभी फंदे बंद हो जाते हैं।

बुनाई डालना (डिजाइन बनाना)

मोतीदाना (साबूदाना) की बुनाई

इस बुनाई को साबूदाना अथवा धनिया की बुनाई कहते हैं।

साबूदाना की बुनाई- सलाई पर 20 फंदे डालें।

पहली सलाई- एक फंदा सीधा, दूसरा फंदा उल्टा इसी प्रकार पूरी सलाई बुनें।

दूसरी सलाई- (उल्टी ओर से) पहला फंदा उल्टा, दूसरा फंदा सीधा इसी प्रकार पूरी सलाई बुनें।

तीसरी सलाई- पहली सलाई की तरह बुनें।

चैथी सलाई- दूसरी सलाई की तरह बुनें।

इसी प्रकार कई सलाई बुनने के बाद देंखेंगे कि साबूदाना जैसी सुंदर बुनाई पड़ गई।

जाली बनाना

बच्चों की ऊनी स्वेटर, फ्राॅक, टोपी, मोजा आदि में रिबन डालने के लिए जाली बनाते हैं।

विधि- एक फंदा सीधा बुनकर ऊन आगे करके 2 फंदा एक साथ सीधा बुनकर एक फंदा बनाएँ इस प्रकार जाली से एक फंदा बढ़ेगा और जोड़ा बुनने से एक फंदा घट जाता हैं। फंदे बराबर हो जाएंगे। उल्टी तरफ सब उल्टा बुनंेगे। इस प्रकार से ऊनी वस्त्र में जाली बना सकते हैं।

अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) मिलान करो-

(क)	11 या 12 नम्बर की सलाई	गर्म या ऊनी वस्त्र पहनते हैं।
(ख)	सर्दी में	बुनाई के लिए आवश्यक हैं।
(ग)	समय तथा धन की बचत	पतले ऊन की बुनाई में प्रयुक्त होती हैं।
(घ)	सलाइयाँ	घर पर बुनाई करने से होती है।

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए-

(1) बार्डर बुनने के लिए .... की सलाइयाँ प्रयोग होती हैं।

(2) बुनाई सदैव .... ऊन से डालें।

(3) बार्डर के फंदे सदैव .... ऊन से डालें।

(3) निम्नलिखित कथनों में सत्य के सामने (T) तथा असत्य के सामने (F) का चिह्न लगाइए-

(क) गर्म वस्त्र गर्मी में पहने जाते हैं।( )

(ख) बुनाई के लिए सलाइयाँ आवश्यक है।( )

(ग) घर पर बुनाई करने से समय का सदुपयोग तथा धन की बचत होती है।( )

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क). हम ऊनी वस्त्र क्यों पहनते हैं ?

(ख) ऊनी वस्त्र कितने प्रकार से बुने जाते हैं, उनके नाम लिखिए।

3. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) बुनाई कला का क्या अर्थ है ?

(ख) स्वयं बुनाई करने के किन्हीं दो लाभों को लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) ऊनी वस्त्र बुनते समय आप कौन-कौन सी सावधानियाँ रखेंगे।

(ख) सीधा एवं उल्टा फंदा बुनने की विधि लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क-

अपनी पसंद की बुनाई के नमूने एवं जाली बनाकर एलबम तैयार कीजिए।